



दैनिक

# विश्व भारत

समस्या जितनी भी बड़ी क्यों न हो समाधान सबका होता है।

■ वर्ष 8 ■ अंक 208 ■ भोपाल, सोमवार 17 अक्टूबर 2022 ■ पृष्ठ 8 ■ मूल्य 2.00 ■ महानगर संस्करण

4 अब एमबीबीएस हिंदी में....



7 सरकार का नशे पर ...

## आनंदम केंद्र चलो अभियान, आनंद विभाग बनाने वाला देश का पहला राज्य है मध्यप्रदेश

# जरूरतमंद की समय पर मदद करना ही सच्चा आनंद है...

नगर संवाददाता, भोपाल

नागरिकों की खुशहाली एवं परिपूर्ण जीवन के लिए आंतरिक तथा बाह्य सकुशलता आवश्यक है। सिर्फ भौतिक प्रगति व सुविधाओं से अनिवार्य रूप से प्रसन्न रहना संभव नहीं है। राज्य का पूर्ण विकास नागरिकों की मानसिक, शारीरिक एवं भावनात्मक उन्नति तथा प्रसन्नता से ही संभव है। अतः नागरिकों को ऐसी विधियां तथा उपकरण उपलब्ध कराने होंगे, जो उनके लिए आनंद का कारक बनें। विकास का मापदण्ड मूल्य आधारित होने के साथ-साथ नागरिकों के आनंद ज्ञात करने वाला भी होना चाहिए। इस अवधारणा को साकार करने के लिए भौतिक प्रगति के पैमाने से आगे बढ़कर आनंद के मापकों को भी समझा जाए तथा उनको बढ़ाने के लिए सुसंगत प्रयास किए जावे। इस उद्देश्य से राज्य सरकार द्वारा आनंद संस्थान का गठन अगस्त 2016 में आनंद विभाग के अर्न्तगत किया गया था।

आनंदम केंद्र अभियान में शामिल

होने वाले लक्ष्मी नारायण हेल्थ एंड एजुकेशन वेलफेयर सोसायटी एवं

के अनेक उपकरण उपलब्ध हैं। बहुत से व्यक्ति निजी स्तर पर ऐसी

हम जानते हैं कि किताबें पढ़कर दिया गया ज्ञान बहुत उथला होता है।

की पहल इस विचार पर आधारित है कि ऐसे व्यक्ति/ आनंदक जो



इसलिए यह जरूरी है कि स्वयं सेवी (आनंदक) पहले यह कौशल खुद सीखें, उसे अपने जीवन में उतारे और फिर अपने अनुभवों को अन्य लोगों तक पहुंचाए तभी उनके द्वारा की गई गतिविधियां तथा प्रयास प्रभावी होंगे।

यह सामान्य अनुभव है कि भले ही प्रसन्नचित रहना हम सभी की जरूरत है परन्तु इसके लिए क्या करना चाहिए इसकी स्पष्ट रूप से जानकारी नहीं होती। विपरीत परिस्थितियों में किस प्रकार संतुलित रहा जा सकता है तथा सामान्य अनुभव में बिना

आनंदित रहना चाहते हैं पहले स्वयं आनंदमयी जीवन जीने का कौशल सीखें, उसका जीवन में अनुसरण करें एवं तत्पश्चात सामूहिक रूप से क्लब का गठन कर उसका अपने पड़ोस में प्रसार करें। आनंदमयी जीवन के दर्शन पर गहन विचार विमर्श / ज्ञान प्राप्त किए बिना सामान्य समझ एवं जागरूकता के आधार पर छोटे-छोटे कार्य कर एवं आदतें विकसित कर आनंदित रह सकते हैं।

अगर आप ऐसा करने के इच्छुक हैं तो आप आनंद क्लब गठित करने की योग्यता रखते हैं। और इसका गठन कर सकते हैं।

आनंदम क्लब के मेंबर मोहन सानी ने अपने अनुभव को साझा किया। आईये जानते हैं उनके अनुभव को: मोहन सानी जी ने बताया कि परिपूर्ण एवं आनंदमयी जीवन जीने के लिए विगत दशकों से साईंस आफ हैप्पीनेस के क्षेत्र में बहुत प्रगति हुई है। भारतीय संस्कृति तथा दर्शन में भी आनंदमयी जीवन जीने

गतिविधियां संचालित करते हैं जिनसे समाज में सकारात्मकता तथा आनंद का प्रसार होता है। यह आवश्यक है कि ऐसे प्रयासों को एक संगठित रूप दिया जाए।

यह सामान्य अनुभव है कि अकेले धनोपार्जन अथवा भौतिक प्रगति समाज की खुशहाली का सूचकांक नहीं है।

उपलब्धि अथवा सफलता के आनंद कैसे प्राप्त हो सकता है जानना सभी के लिए जरूरी है।

यह मान्यता है कि स्वयं और परिवेश के प्रति जागरूकता बढ़ा कर हम प्रसन्न रह सकते हैं। इससे सामाजिक समरसता तथा खुशहाली संभव होगी।

मेरा मानना है कि आनंदक क्लब

आनंदम केंद्र चलो अभियान के मौके पर सीईओ अखिलेश अर्गल, सलाहकार सत्य प्रकाश आर्य, कार्यक्रम समन्वयक मनु दीक्षित, आईटी इंचार्ज स्मिता जैन, सहायक कार्यक्रम केपी तिवारी सहित अन्य जिलों से आए लोगों ने दो दिनों तक आनंद की अनुभूति की एवं अपने विचार रखे।